जरा सोचो तो सही... How lucky and Great we are...!

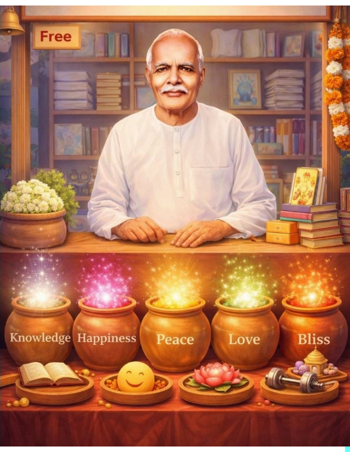

06-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

“मीठे बच्चे - बाप के पास जो वक्खर (सामान) है, उसका पूरा ही अन्त तुम्हें मिला है, तुम उसे धारण करो और कराओ"

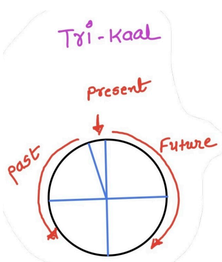

प्रश्नः- त्रिकालदर्शी बाप ड्रामा के आदि-मध्य-अन्त को जानते हुए भी कल की बात आज नहीं बताते हैं - क्यों?

मैं भी ड्रामा के बंधन में हूँ।

उत्तरः- बाबा कहते - बच्चे अगर मैं पहले से ही बता दूँ तो ड्रामा का मजा ही निकल जाए। यह लॉ नहीं कहता। सब कुछ जानते हुए मैं भी ड्रामा के वश हूँ। पहले सुना नहीं सकता, इसलिए क्या होगा तुम उसकी चिंता छोड़ दो।

गीत:-मरना तेरी गली में...... Click

मरना तेरी गली में
मरना तेरी गली में
जीना तेरी गली में
मरना तेरी गली में
जीना तेरी गली में
मरना तेरी गली
मिट जायेगी हमारी
दुनिया तेरी गली में
दुनिया तेरी गली में
मरना तेरी गली

आये है तेरे दर पे
हम ज़िन्दगी लुटाने
तू देखे या न देखे
तू जाने या न जाने
पूरा करेंगे हम तो
वादा तेरी गली में
मरना तेरी गली में

दिल से तेरी मोहब्बत
कम उम्र भर न होगी
हम तुझपे मर मिटेंगे
तुझको खबर न होगी

Extreme love With invincible Determination

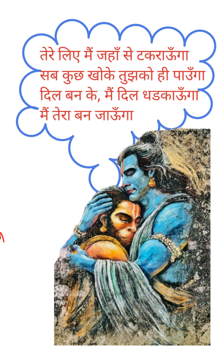

मरने के बाद होगा
चर्चा तेरी गली में
मरना तेरी गली

मिट जायेगी हमारी
दुनिया तेरी गली में
दुनिया तेरी गली में
मरना तेरी गली

ओम् शान्ति। यह है पारलौकिक आत्माओं का बाप। आत्माओं से ही बात करते हैं। उनको बच्चे-

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

साागर की बाहों में मौज़ें है जितनी
हमको भी तुमसे मोहब्बत है उतनी
के ये बेक़रारी ना अब होगी कम
बहुत प्यार करते हैं तुमको सनम

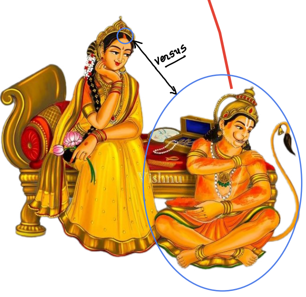

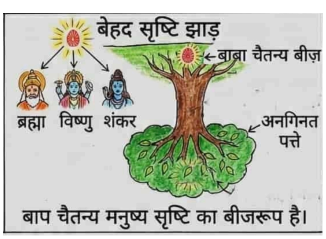

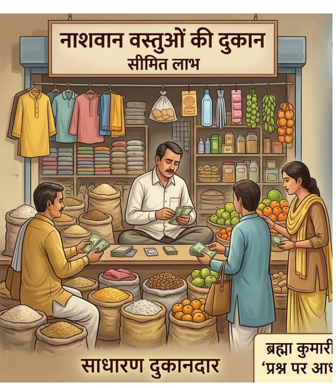

v|s

बच्चे कहने की प्रैक्टिस हो जाती है। भल शरीर बच्ची का है परन्तु आत्मायें तो सब बच्चे ही हैं। हर आत्मा वारिस है अर्थात् वर्सा लेने की हकदार है। बाप आकर कहते हैं बच्चों तुम हर एक को वर्सा लेने का हक है। बेहद के बाप को बहुत याद करना है, इसमें ही मेहनत है। बाबा परमधाम से आये हैं हमको पढ़ाने। साधू-सन्त तो अपने घर से आते हैं वा कोई गाँवड़े से आते हैं। बाबा तो परमधाम से आये हैं हमको पढ़ाने। यह किसको मालूम नहीं है। बेहद का बाप वही पतित-पावन गॉड फादर है। उनको ओशन ऑफ नॉलेज भी कहते हैं, अथॉरिटी है ना। कौन सी नॉलेज है? ईश्वरीय नॉलेज है। बाप है मनुष्य सृष्टि का बीज रूप। सत-चित्-आनंद स्वरूप। उनकी बड़ी भारी महिमा है। उनके पास यह वक्खर (सामग्री) है। कोई के पास दुकान होता है, कहेंगे हमारी दुकान में यह-यह वैरायटी है। बाप भी कहते हैं मैं ज्ञान का सागर, आनंद का सागर, शान्ति का सागर हूँ। मेरे पास यह सब वक्खर मौजूद है। मैं संगम पर आता हूँ डिलेवरी करने, जो कुछ मेरे पास है सब डिलेवरी करता हूँ फिर

v|s वाह रे मैं...

- **कहावत:** "किनकी दबी रही धूल में, किसके राजा खाएं, किसके चोर लूट ले जाए, किसके आग जलाए"।
- **भावार्थ:** यह कहावत बताती है कि जो धन अहंकार में या केवल संचय करने के लिए जोड़ा जाता है, वह अंततः धूल (विनाश) में मिल जाता है या गलत हाथों में चला जाता है।

- **मुरली का संदेश:** यह महावाक्य बच्चों को सलाह देता है कि इस नश्वर धन को अपने पास सुरक्षित रखने के बजाय, इसे ईश्वरीय या यज्ञ की सेवा में सफल करें, जिससे भविष्य में (सत्ययुग में) लाभ मिल सके।

आने वाले समय में जब war like situations होगी तब सरकार इमरजेंसी लगाएगी जिसमें फाइनेंशियल एमरजैंसी भी लगेगी तो उस समय बैंक अकाउंट एवं जो भी एसेट है उसको भी सरकार जप्त कर सकती है।

our Basic Need

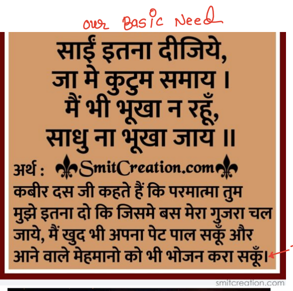
साईं इतना दीजिये,
जा मे कुटुम समाय।
मैं भी भूखा न रहूँ,
साधु ना भूखा जाय॥
अर्थ : SmitCreation.com
कबीर दस जी कहते हैं कि परमात्मा तुम मुझे इतना दो कि जिसमे बस मेरा गुजरा चल जाये, मैं खुद भी अपना पेट पाल सकूँ और आने वाले मेहमानो को भी भोजन करा सकूँ।
smitcreation.com

That's All

ऐसे गिरेंगे जैसे ताश के पत्ते गिरते हैं। इसका मतलब यह नहीं कि वही मरेंगे बाकी दूसरे रह जायेंगे। नहीं, जो जहाँ होगा चाहे समुद्र पर हो, पृथ्वी पर हो, आकाश में हो, पहाड़ों पर हो, उड़ रहा हो....... सब खत्म हो जायेंगे। यह पुरानी

SM: 10/09/2024

Most imp

06-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

जितना जो धारण करे अथवा जितना पुरुषार्थ करे। बच्चे जानते हैं - बाप के पास क्या-क्या है और एक्यूरेट जानते हैं। आजकल किसको अपना अन्त कोई बताते नहीं हैं। गाया हुआ है - किनकी दबी रही धूल में... यह सब अभी की बात है। आग लगेगी सब खत्म हो जायेंगे। राजाओं के पास अन्दर बहुत बड़ी मज़बूत गुफायें रहती हैं। भल अर्थक्वेक हो, जोर से आग लगे तो भी अन्दर से निकल आते हैं। तुम बच्चे जानते हो यहाँ की कोई भी चीज़ वहाँ काम नहीं आनी है। खानियां भी सब नयेसिर भरपूर हो जाती हैं। साइंस भी रिफाइन हो तुम्हारे काम आती है। तुम बच्चों की बुद्धि में अब सारा ज्ञान है। बच्चे जानते हैं हम सृष्टि के आदि-मध्य-अन्त को जानते हैं। बाकी अन्त का थोड़ा टुकड़ा है, जिसको भी जान जायेंगे। बाबा पहले से ही सब कैसे बता दे, बाप कहते हैं - मैं भी ड्रामा के वश हूँ, जो ज्ञान अब तक मिला है वही ड्रामा में नूँध है। जो सेकेण्ड पास हुआ, उनको ड्रामा समझना है। बाकी जो कल होगा वह देखा जायेगा। कल की बात आज नहीं सुनायेंगे। इस

Mind very well... ; so, Please don't invest too much time behind Money

मैं भी ड्रामा के बंधन में हूँ।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Most imp

06-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

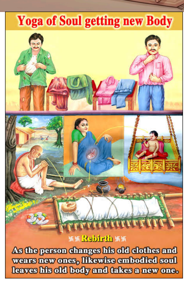

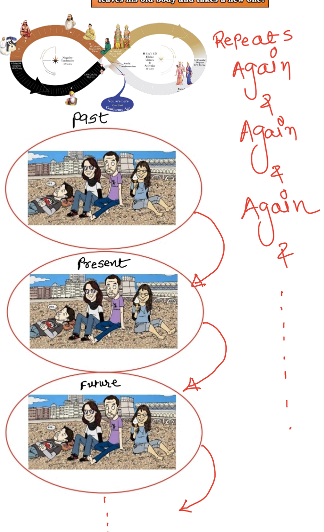

ड्रामा के राज़ को मनुष्य समझते नहीं हैं। कल्प की आयु ही कितनी लम्बी चौड़ी लगा दी है। इस ड्रामा को समझने की भी हिम्मत चाहिए। अम्मा मरे तो भी हलुआ खाना....समझते हैं मर गये जाकर दूसरा जन्म लिया। हम रोयें क्यों? बाबा ने समझाया है - अखबार में तुम लिख सकते हो, यह प्रदर्शनी आज से 5 हजार वर्ष पहले इस तारीख, इस ही स्थान पर इस रीति हुई थी। यह वर्ल्ड की हिस्ट्री-जॉग्राफी रिपीट हो रही है, लिख देना चाहिए। यह तो जानते हैं - ये तो पक्का कर लो.. यह दुनिया बाकी थोड़े दिन है, यह सब खत्म हो जायेंगे। हम तो पुरुषार्थ कर विकर्माजीत बन जायेंगे फिर द्वापर से विक्रम संवत शुरू होता है अर्थात् विकर्म होने का संवत। इस समय तुम विकर्मों पर जीत पाते हो तो विकर्माजीत बन जाते हो। पाप कर्मों को श्रीमत से जीत कर विकर्माजीत बन जाते हो। वहाँ तुम आत्म-अभिमानी होते हो। वहाँ देह-अभिमान होता नहीं। कलियुग में देह-अभिमान है। संगम पर तुम देही-अभिमानी बनते हो। परमपिता परमात्मा को भी जानते हो। यह है शुद्ध अभिमान। तुम ब्राह्मण

Point to ponder

हम सतयुग में कैसे देही अभिमानी होंगे?

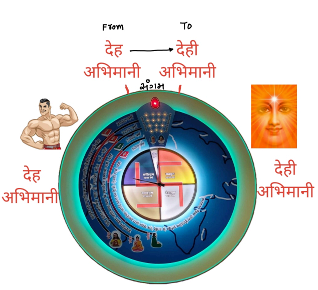

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

चढ़ाओ नशा...

चढ़ाओ नशा...

How lucky and Great we are...!

06-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

Simple Math..

Point to be Noted

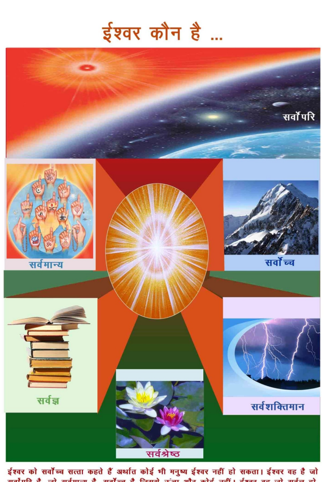

सबसे ऊंच हो। तुम हो सर्वोत्तम ब्राह्मण कुल भूषण। यह नॉलेज सिर्फ तुमको मिलती है, दूसरे किसको मिलती नहीं। तुम्हारा यह सर्वोत्तम कुल है। गाया भी जाता है अतीन्द्रिय सुख गोपी वल्लभ के बच्चों से पूछो। तुमको अब लॉटरी मिलती है। कोई चीज़ मिल जाती है, उसकी इतनी खुशी नहीं होती है। जब गरीब से साहूकार बन जाते हैं तो खुशी होती है। तुम भी जानते हो जितना हम पुरुषार्थ करेंगे उतना बाप से राजधानी का वर्सा लेंगे। जो जितना पुरुषार्थ करेगा उतना पायेगा। मुख्य बात बाप कहते हैं बच्चे अपने मोस्ट बील्वेड बाप को याद करो। वह सब का बील्वेड बाप है। वही आकर सबको सुख शान्ति देते हैं। अभी देवी-देवताओं की राज-धानी स्थापन हो रही है। वहाँ किंग-क्वीन नहीं होते। वहाँ कहेंगे महाराजा-महारानी। अगर भगवान-भगवती कहें तो फिर यथा राजा-रानी तथा प्रजा, सब भगवान-भगवती हो जायें इसलिए भगवान-भगवती कहा नहीं जाता। भगवान एक है। मनुष्य को भगवान नहीं कहा जाता। सूक्ष्मवतनवासी ब्रह्मा, विष्णु, शंकर

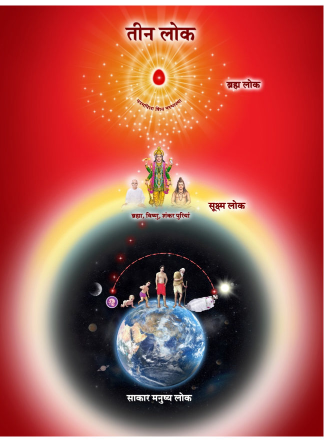

How Sweet...!

को भी देवता कहते हैं। स्थूलवतन-वासी को हम भगवान भगवती कैसे कहेंगे। ऊंच ते ऊंच है मूलवतन फिर सूक्ष्मवतन, यह है थर्ड नम्बर। यह तुम्हारी बुद्धि में रहना चाहिए। हम आत्माओं का बाप शिवबाबा ही है फिर शिक्षक भी है, गुरू भी है। सुनार, बैरिस्टर आदि सब है। सबको रावण की जेल से छुड़ाते हैं। शिवबाबा कितना बड़ा बैरिस्टर है। (पुछो अपने आप से...) तो ऐसे बाप को क्यों भूलना चाहिए। क्यों कहते हैं, बाबा हम भूल जाते हैं। माया के बहुत तूफान आते हैं। बाबा कहते हैं (हाँ जी मेरे मीठे ते मीठे बाबा...) यह तो होगा। कुछ तो मेहनत करनी पड़े। यह है माया से लड़ाई। तुम पाण्डवों की कोई कौरवों से लड़ाई नहीं है। पाण्डव कैसे लड़ाई करेंगे। फिर तो हिंसक हो जायेगी। बाप कभी हिंसा नहीं सिखाते हैं। कुछ भी समझ नहीं सकते हैं। वास्तव में हमारी कोई लड़ाई है नहीं। बाबा सिर्फ युक्ति बताते हैं कि मुझे याद करो, माया का वार नहीं होगा। इस पर भी एक कहानी है, पूछा - पहले सुख चाहिए वा दु:ख? तो बोला सुख। दु:ख हो न सके सतयुग में।

m.m.m....imp.

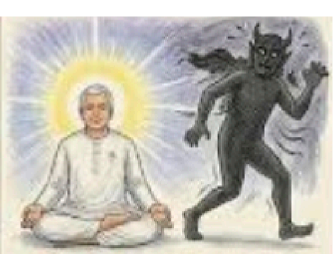

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

06-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति

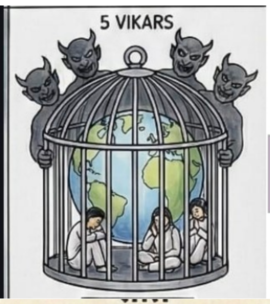

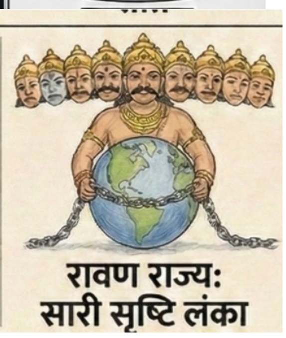

तुम जानते हो - इस समय सभी सीतायें रावण की शोक वाटिका में हैं। यह सारी दुनिया सागर के बीच में लंका है। अभी सब रावण की जेल में पड़े हैं। सर्व की सद्गति करने के लिए बाप आये हैं। सब शोक वाटिका में हैं। स्वर्ग में है सुख, नर्क में है दु:ख। इसको शोक वाटिका कहेंगे। वह है अशोक, स्वर्ग। बहुत बड़ा अन्तर है। तुम बच्चों को कोशिश कर बाप को याद करना चाहिए तो खुशी का पारा चढ़ेगा। बाप की राय पर नहीं चलेंगे तो सौतेले ठहरे। फिर प्रजा में चले जायेंगे। मातेले होंगे तो राजधानी में आ जायेंगे। राजधानी में आना चाहते हो तो श्रीमत पर चलना पड़े। श्रीकृष्ण की मत नहीं मिलती है। मत हैं ही दो। अभी तुम श्रीमत लेते हो फिर सतयुग में उसका फल भोगते हो। फिर द्वापर में रावण की मत मिलती है। सब रावण की मत पर असुर बन जाते हैं। तुमको मिलती है ईश्वरीय मत। मत देने वाला एक ही बाप है। वह है ईश्वर। तुम ईश्वरीय मत से कितना पवित्र बनते हो। पहला पाप है - विषय सागर में गोता खाना। देवतायें विषय

Definition of

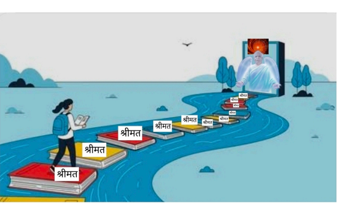

100 बातों की एक बात..

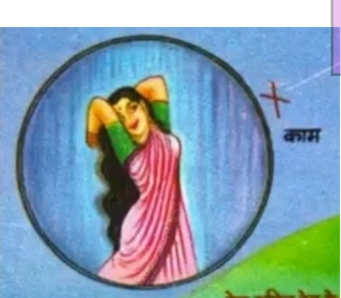

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

06/04/2026

Heaven/सतयुग

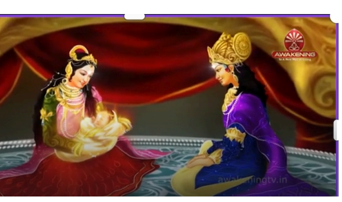

सागर में गोता नहीं खायेंगे। कहेंगे क्या वहाँ बच्चे नहीं होते हैं? बच्चे क्यों नहीं होते! परन्तु वह है ही वाइसलेस दुनिया, सम्पूर्ण निर्विकारी। वहाँ यह कोई विकार होते नहीं। बाप ने समझाया है - देवता सिर्फ आत्म-अभिमानी हैं, परमात्म-अभिमानी नहीं हैं। तुम आत्म-अभिमानी भी हो, परमात्म-अभिमानी भी हो। पहले दोनों नहीं थे। सतयुग में परमात्मा को नहीं जानते। आत्मा को जानते हैं कि हम आत्मा यह पुराना शरीर छोड़ फिर जाए नया शरीर लेंगी। पहले मालूम पड़ जाता है, अब पुराना छोड़ नया लेना है। बच्चा होता है तो भी पहले से साक्षात्कार हो जाता है। योगबल से तुम सारे विश्व के मालिक बन जाते हो। तो क्या योगबल से बच्चे नहीं हो सकते! योगबल से कोई भी चीज़ को तुम पावन बना सकते हो। परन्तु तुम याद भूल जाते हो। कोई को अभ्यास पड़ जाता है। बहुत संन्यासी लोग भी होते हैं जिनको भोजन का कदर रहता है, तो उस समय बहुत मन्त्र पढ़कर फिर खाते हैं। तुमको भी परहेज तो बताई है। कुछ भी मास-मदिरा नहीं खाना है। तुम देवता बनते हो ना।

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

ये सदैव याद रहे...

m.m.m....imp. और क्या चाहीए आपको?

06-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

देवतायें कभी किचड़पट्टी नहीं खाते। तो ऐसा पवित्र बनना है। बाप कहते हैं मेरे द्वारा तुम मुझे जानने से सब कुछ जान जायेंगे। फिर जानने का कुछ रहेगा नहीं। सतयुग में फिर पढ़ाई भी और होती है। इस मृत्युलोक की पढ़ाई का अब अन्त है। मृत्युलोक की सारी कारोबार खत्म हो फिर अमरलोक की शुरू होगी। इतना बच्चों को नशा चढ़ना चाहिए। अमरलोक के मालिक थे, तुम बच्चों को अतीन्द्रिय सुख, परम सुख में रहना चाहिए। परमपिता परमात्मा के हम बच्चे हैं अथवा स्टूडेन्ट हैं। परमपिता परमात्मा हमको अब घर ले जायेंगे, इनको ही परमानन्द कहा जाता है। सतयुग में यह बातें होती नहीं। यह तुम अभी सुनते हो, इस समय ईश्वरीय फैमिली के हो। अभी का ही गायन है - अतीन्द्रिय सुख गोप गोपियों से पूछो। परमधाम का रहने वाला बाबा आकर हमारा बाप, टीचर, गुरू बनते हैं। तीनों ही सर्वेन्ट ठहरे। कोई अभिमान नहीं रखते। कहते हैं हम तुम्हारी सेवा कर तुमको सब कुछ दे निर्वाणधाम में बैठ जायेंगे, तो सर्वेन्ट हुआ ना। वाइसराय आदि हमेशा सही

कापारी खुशी

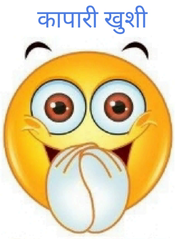

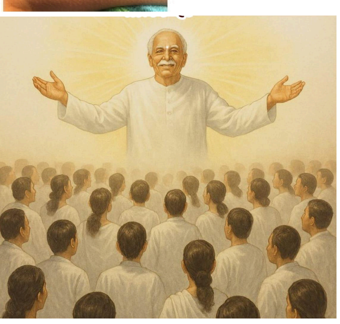

Definition of

How Sweet...!

नाज उठाते हमें बिठाते, आप तो अपने कंधों पर
याद-प्यार दे करते नमस्ते, बली-बली जाते बच्चों पर
ऐसे प्यार का मधुरस पी के, सब रस लगते फीके हैं
मीठे बच्चे मीठे बच्चे बोल ये कितने मीठे है
मीठा हमे बनाते बाबा, आप बड़े ही मीठे है

कहाँ मिलेगा बाबा ऐसा सतयुग में तेरा प्यार...

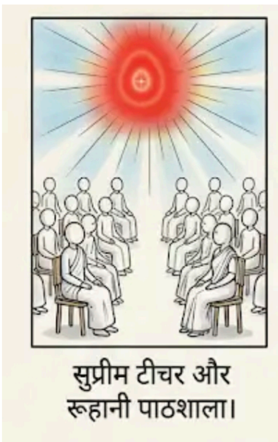

Simple Logic

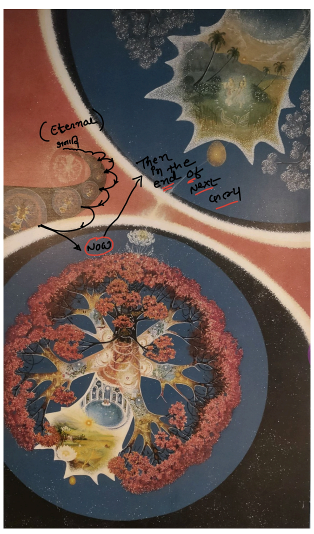

करते हैं तो ओबीडियन्ट सर्वेन्ट लिखते हैं। बाबा भी निराकार, निरहंकारी हैं। कैसे बैठ पढ़ाते हैं। इतनी ऊंच पढ़ाई और कोई पढ़ा न सके। इतनी प्वाइंट्स कोई दे न सके। मनुष्य तो जान नहीं सकते, इनको कोई गुरू ने नहीं सिखाया। गुरू होता तो बहुतों का होता। एक का होता है क्या? यह बाप ही पतितों को पावन बनाते हैं। आदि सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना कर रहे हैं। बाबा कहते हैं मैं कल्प-कल्प, कल्प के संगमयुगे आता हूँ। कहते हैं ना - बाबा हम कल्प पहले भी मिले थे। बाप ही आकर पतितों को पावन बनायेंगे। 21 जन्मों के लिए तुम बच्चों को पावन बनाता हूँ। तो यह सब धारणा करनी चाहिए फिर बताना चाहिए - बाबा ने क्या समझाया। "बाप से हम भविष्य 21 जन्मों का वर्सा लेते हैं।" यह याद रहने से फिर खुशी में रहेंगे। यह परमआनन्द है। मास्टर नॉलेजफुल, ब्लिसफुल यह सब वरदान बाप से अभी तुमको मिलते हैं। सतयुग में तो बुद्धू होंगे। इन लक्ष्मी-नारायण को तो कुछ भी नॉलेज नहीं। इन्हों को होती तो परम्परा से चली आती।

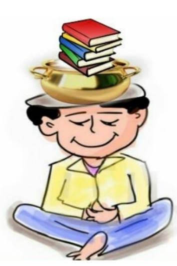

Points: ज्ञान योग धारणा सेवा M.imp.

Simple Logic

चढ़ाओ नशा...

06-04-2026 प्रात:मुरली ओम् शान्ति "बापदादा" मधुबन

तुम जैसा परम आनन्द देवताओं को भी नहीं हो सकता है। अच्छा!

मीठे-मीठे सिकीलधे बच्चों प्रति मात-पिता बापदादा का याद-प्यार और गुडमार्निंग। रूहानी बाप की रूहानी बच्चों को नमस्ते।

धारणा के लिए मुख्य सार:-

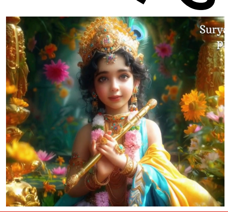

1) देवता बनने के लिए खान-पान की बहुत शुद्धि रखनी है। बहुत ही परहेज से चलना है। योगबल से भोजन को दृष्टि दे शुद्ध बनाकर स्वीकार करना है।

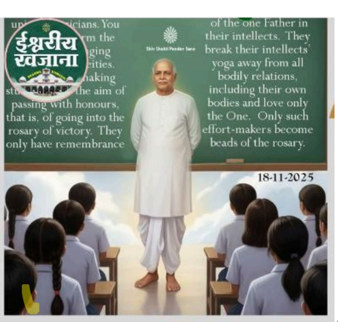

चढ़ाओ नशा... कौन हो तुम...

2) परमपिता परमात्मा के हम बच्चे अथवा स्टूडेन्ट हैं, वह हमें अब अपने घर ले जायेंगे, इसी नशे में रह परम सुख, परम आनन्द का अनुभव करना है।

Method/Process/Instrument　　Outcome/Output/Result

06-04-2026　प्रात:मुरली　ओम् शान्ति　"बापदादा"　मधुबन

वरदान: सेवा की लगन द्वारा लौकिक को अलौकिक प्रवृत्ति में परिवर्तन करने वाले निरन्तर सेवाधारी भव

Finale Achievement

very important vardan for grahast or those who are not surrendered

सेवाधारी का कर्तव्य है निरन्तर सेवा में रहना - चाहे मंसा सेवा हो, चाहे वाचा वा कर्मणा सेवा हो। सेवाधारी कभी भी सेवा को अपने से अलग नहीं समझते।

Always/constant

जिनकी बुद्धि में सदा सेवा की लगन रहती है उनकी लौकिक प्रवृत्ति बदलकर ईश्वरीय प्रवृत्ति हो जाती है।

Transformed

सेवाधारी घर को घर नहीं समझते लेकिन सेवास्थान समझकर चलते हैं।

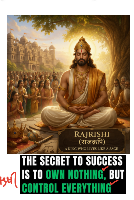

definition of sanyasi

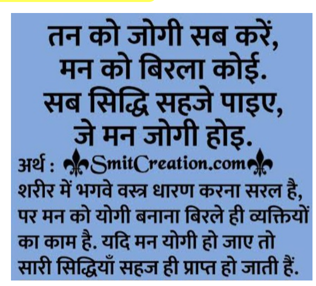
तन को जोगी सब करें,
मन को बिरला कोई.
सब सिद्धि सहजे पाइए,
जे मन जोगी होइ.
अर्थ : SmitCreation.com
शरीर में भगवे वस्त्र धारण करना सरल है, पर मन को योगी बनाना बिरले ही व्यक्तियों का काम है. यदि मन योगी हो जाए तो सारी सिद्धियाँ सहज ही प्राप्त हो जाती हैं.

सेवाधारी का मुख्य गुण है त्याग। त्याग वृत्ति वाले प्रवृत्ति में तपस्वीमूर्त होकर रहते हैं जिससे सेवा स्वत: होती है।

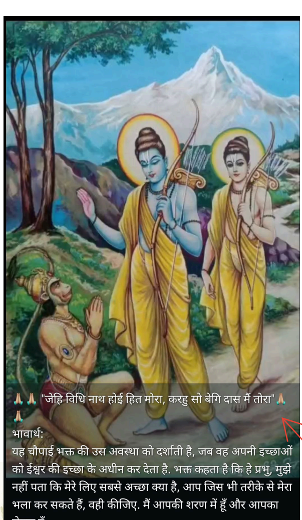

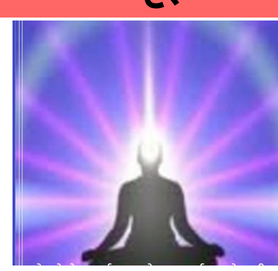

If　　Then

स्लोगन: अपने संस्कारों को दिव्य बनाना है तो मन-बुद्धि को बाप के आगे समर्पित कर दो।

Just like हनुमानजी [100 % मन, बुद्धि समर्पित]

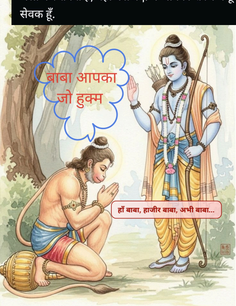

Points: ज्ञान　योग　धारणा　सेवा　M.

बाप समान

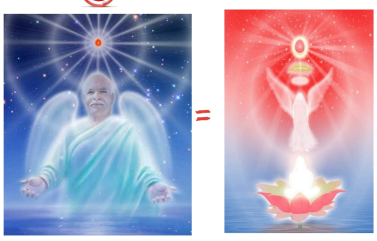

ये अव्यक्त इशारे -

महान बनने के लिए

मधुरता और नम्रता का गुण धारण करो

Just like Sweet Brahmababa did...

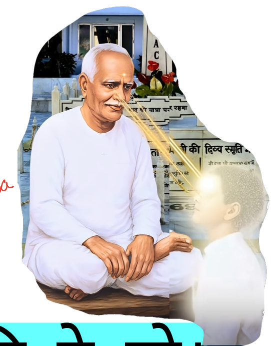

किसी भी आत्मा को दो घड़ी मीठी दृष्टि दे दो। मीठे बोल बोल दो तो उस आत्मा को सदा के लिए भरपूर कर देंगे।

यह दो घड़ी की मधुर दृष्टि, बोल उस आत्मा की सृष्टि बदल देंगे।

Forever

दो मधुर बोल सदा के लिए बदलने के निमित्त बन जायेंगे।

TELEGRAM

If you wish to stay connected, Here is the link

WhatsApp

BKdrluhar

अगर आपके पास कोई शास्त्रों के व गीता आदि के श्लोक या कुछ भी और है - जिससे ज्ञान का और भी सरल स्पष्टीकरण हो सकता हैं तो कृपया merababa2809@gmail.com पर भेज सकते है (हो सकता है आपको मुरली पढ़ते वक्त कई बार मन में आया हो कि बाबा के इस महावाक्य के लिए ये श्लोक, इमेज या और कुछ रखे तो पढ़ने वाले को ओर ज्यादा clarity मिलेगी)

ये जो आपका सहयोग होगा वो हजारों आत्माओं को ज्ञान समझने में मदद करेगा
जिसके फल स्वरूप, उनकी दुआएं आपके सेवा के subject में Add होगी...

For Example (1)

(2)

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम्।
बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्॥

हे अर्जुन! तू सम्पूर्ण भूतोंका सनातन बीज मुझको ही जान। मैं बुद्धिमानोंकी बुद्धि और तेजस्वियोंका तेज हूँ॥ १०॥ अध्याय- 7

बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम्।
धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ॥

हे भरतश्रेष्ठ! मैं बलवानोंका आसक्ति और कामनाओंसे रहित बल अर्थात् सामर्थ्य हूँ और सब भूतोंमें धर्मके अनुकूल अर्थात् शास्त्रके अनुकूल काम हूँ॥ ११॥